Date ___/___/________

Date :- 19/5/2020	Degree Part-I (Hons.)
Content Writer :-	Paper :- I
Dr. Akshay Kumar Pathak	Content of Paper :-
Deptt. of Economics,	Micro Economics
Marwari College,	Module - I
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- THE CONCEPT OF SUPPLY
(पूर्ति की अवधारणा)

Scanned with CamScanner

पूर्ति एवं वस्तु की उत्पादित मात्रा में आमतौर पर किसी प्रकार का अन्तर नहीं समझा जाता है। परन्तु आर्थिक विश्लेषण में पूर्ति एवं उत्पादन एक दूसरे के पर्यायवाची नहीं हैं। आर्थिक विश्लेषण के अंतर्गत वस्तु की वह मात्रा जो एक निश्चित अवधि में एक निश्चित कीमत पर बाजार में बेची जाती है, पूर्ति कहलाती है। जिस प्रकार मांग सदैव किसी समय की अवधि तथा कीमत से जुड़ी रहती है, उसी प्रकार पूर्ति भी किसी समय की अवधि तथा किसी कीमत के बिना कोई अर्थ नहीं रखती। विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने पूर्ति को परिभाषित करते हुए इस मात्रा के साथ सम्बन्ध को भी विश्लेषण किया है। प्रो० बेनहम ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि "पूर्ति का तात्पर्य वस्तु की उस मात्रा से लगाया जाता है, जो प्रति समय इकाई में किसी के लिए उपलब्ध है।"

दूसरी तरफ प्रो० मेयर्स ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है कि "पूर्ति किसी वस्तु की मात्राओं की अनुसूची है जो विभिन्न कीमतों पर किसी विशेष समय या समय अवधि में विक्रय के लिए प्रस्तुत की जाए।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं

कि पूर्ति का अर्थ उस मात्रा से है जो उत्पादक या विक्रेता किसी समय विशेष पर एक निश्चित मूल्य पर बेचने को तैयार होता है। पूर्ति को सरल रूप में समझने के लिए यह आवश्यक है कि पूर्ति एवं उत्पादित वस्तु के स्टॉक में अन्तर स्पष्ट कर सकें।

स्टॉक वस्तु की वह मात्रा है जो किसी समय विशेष पर बाजार में विक्रेताओं के पास उपलब्ध है। यदि बाजार में वस्तु की कीमत कम है तो विक्रेता वस्तु का अधिक स्टॉक रखते हुए भी वस्तु की कम मात्रा बेचने को तैयार होता है। अर्थात वस्तु की कीमत कम होने पर विक्रेता अपने उपलब्ध स्टॉक से कम वस्तु की पूर्ति करता है। अर्थात, वस्तु की स्टॉक एवं पूर्ति के बीच वस्तु की कीमत एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम करता है।

वस्तु के पूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक (Factors affecting the Supply of Commodity)

किसी वस्तु की पूर्ति विभिन्न कारकों द्वारा निर्धारित है, जो निम्नांकित है :—

(1) वस्तु की कीमत (Price of Product) :—

वस्तु की पूर्ति को निर्धारित

होनेवाला सबसे प्रमुख घटक वस्तु की कीमत। यदि वस्तु की कीमत जितनी अधिक होगी उतनी ही अधिक मात्रा में उत्पादक वस्तुओं की पूर्ति होगी। इसके विपरीत अगर वस्तु की कीमत जितनी कम होगी, उत्पादक उतनी कम वस्तु की पूर्ति करेगा।

(2) संबंधित वस्तुओं की कीमतें (Prices of Related Goods) :-

एक वस्तु की पूर्ति उससे संबंधित वस्तुओं की कीमत और विशेष रूप से स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत पर निर्भर करती है। यदि किसी वस्तु के स्थानापन्न वस्तु के कीमत में वृद्धि होती है, तो उत्पादक स्थानापन्न अन्य वस्तु की पूर्ति में वृद्धि कर देता है।

(3) उत्पादन के साधनों की कीमतें (Prices of Factors of Production) :-

एक वस्तु की पूर्ति उत्पादन के साधनों की कीमत पर निर्भर करती है। यदि एक वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त साधनों की कीमतें बढ़ जाती हैं, तो वस्तु की कुल उत्पादन लागत भी बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में उत्पादक अपने साधनों को उस वस्तु के उत्पादन से निकालकर संबंधित

Scanned with CamScanner

1'

Date __/__/____ Page No.: ______

के उत्पादन में लगाता है जिससे कम लागत पर उत्पादन किया जा सके। इसके परिणामस्वरूप इस वस्तु की पूर्ति कम हो जाएगी।

(4) उत्पादकों के उद्देश्य (Objectives of Producer)

सामान्यतया प्रत्येक फर्म अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहती है लेकिन कई बार उत्पादक सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए अपने लाभों का त्याग कर ऐसी वस्तु का उत्पादन करते हैं जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सके।

(5) तकनीकी ज्ञान का स्तर (Level of Technical Knowledge) :-

समय के साथ तकनीकी ज्ञान में भी परिवर्तन होता है। नए अनुसंधानों एवं पवर्तनों से उत्पादन की विधियों में सुधार होता है तथा वस्तु की पूर्ति बढ़ती है।